60

॥ श्री अग्रसेन जयते ॥

श्री अग्रसेन काव्य संग्रह

प्रकाशक : डॉ. लोकमणि गुप्ता
संस्थापक अध्यक्ष : श्री अग्रसेन युवा समिति कोटा (पंजीकृत)
जिला महामंत्री : अग्रवाल सम्मेलन जिला कोटा
(अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन नई दिल्ली की कोटा जिला इकाई)

राष्ट्रीय कार्यकारिणि सदस्य

अपनी बात .....

''सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं
चन्द काँटे ही बुहार जाऊँ यही मेरी हसरत है''

''श्री अग्रसेन, अग्रोहा, अग्रवाल'' समाज के हर पर्व एवं कार्यक्रमों के अवसर पर कुछ ऐसी रचनाओं की कमी सदैव महसूस की जाती रही है जो कि अपने

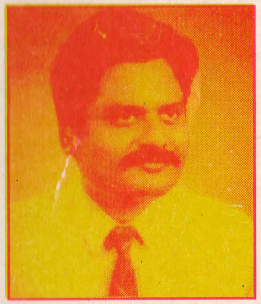

अग्रकुल संस्थापक महाराजा श्री अग्रसेन जी, उनकी कर्मभूमि अपनी पितृ भूमि अग्रोहा एवं अपने अग्रवाल समाज (जाति) की यशोगाथा पद्यात्मक शैली में प्रस्तुत करती हो। श्री अग्रसेन जयन्ती के अवसर पर इनकी तलाश एवं मांग विशेष बढ जाती है। किन्तु अनायास ये सुलभ नहीं हो पाती।

कार्यक्रम प्रस्तुति की इस रिक्तता को भरने के प्रयास में ही, एक अकिंचन द्वारा अपने परिजनों को समर्पित यह किंचित छोटा सा संग्रह समाज की सेवा में सादर प्रस्तुत है। विश्वास है आपके मन को भायेगा। आप इसे संभाल कर रखेंगे एवं सामाजिक कार्यक्रमों में इसका उपयोग करेंगे।

मैं सनलाईट आफसेट के श्री चांदमल जी पाटनी एवं भाई श्री अशोक पाटनी का आभार प्रकट करता हूं जिनके माध्यम से मुझे समाज के भामाशाह श्री रमेश जी गुप्ता चेयरमेन शिव ज्योति शिक्षा समिति एवं श्री महेश जी गुप्ता निदेशक शिव ज्योति सीनियर सैकेण्डरी स्कूल इन्द्रा विहार तलवण्डी कोटा वालों का सहयोग मिला। मैं ऐसे महानुभावों के प्रति अपनी कृतज्ञताएं प्रेषित करता हूं।

अन्त में समाज की विविध जन हितेषी संस्थाओं के प्रबुद्ध पदाधिकारियों एवं समाज सेवी अग्रबंधुओं से मेरा एक छोटा सा निवेदन और है कि अब हम अपनी सेवाओं को अग्रवाल संगठनों के माध्यम से चिकित्सा एवं उच्च शिक्षा के क्षेत्र की तरफ मोड़ें जिससे कि हमारी मेधावी प्रतिभावान नवअंकुरित धरोहर ''आर्थिक विवशताओं एवं आरक्षणासुर'' के भय से कुण्ठित न होने पावे।

DR. LOK MANI GUPTA
Homoeopathic Physician, Reg. No. 2636
GUPTA HOMOEO CLINIC
Agrasen Bazar, KOTA-6

डॉ. लोकमणि गुप्ता
संकलक
''श्री अग्रसेन काव्य संग्रह''

''श्री अग्रसेन जयते''

श्री अग्रसेन काव्य संग्रह

अग्रवालों जयन्ती मनाने चलो, पूर्वजों की अमर कीर्ति गाते चलो।
कैसे पूर्वज हमारे परमवीर थे, सुर साधक गुणी धीर रणधीर थे।
उनके चरणों में मस्तक झुकाते चलो, अग्रवालों जयन्ती मनाने चलो।
कैसी जोहर में कूदी सती नारियां, शील संयम की साधक थी सुकुमारियां।
मान सतियों का हरदम बढाते चलो, अग्रवालों जयन्ती मनाने चलो।
मिलके भाई के गले से गला, भेद को त्याग के सबका कीजे भला।
अपना गौरव जगत में बढाते चलो, अग्रवालों जँयन्ती मनाने चलो।
देश भर में हमारी बड़ी शान है, छत्र है जो चंवर जिसकी पहचान है।
ज्ञान को फिर से ऊँचा उठाते चलो, अग्रवालों जयन्ती मनाने चलो।

प्रकाशन एवं संकलन : डॉ. लोकमणि गुप्ता
संस्थापक अध्यक्ष : श्री अग्रसेन युवा समिति कोटा
जिला महामंत्री : अग्रवाल सम्मेलन जिला कोटा
(अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन नई दिल्ली की कोटा जिला इकाई)
प्रकाशन सहयोग : श्री महेश गुप्ता (निदेशक शिव ज्योति सि. सै. स्कूल)
सम्पादन सहयोग : श्री वी. पी. गुप्ता (सहायक लेखा परीक्षा अधिकारी)
मुद्रण सहयोगी : सनलाईट ऑफसेट, गुलाब बाड़ी, कोटा

सादर चरणार्पित

सम्पादकीय.....

''श्रेष्ठ रचनाओं का खजाना .....श्री अग्रसेन काव्य संग्रह''

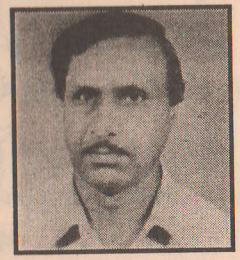

अग्रवाल समाज पर आधारित श्रेष्ठ रचनाओं के संग्रह का सम्पादन करना मेरे लिए गौरव की बात है और इसके लिए मैं डां. लोकमणी गुप्ता का आभारी हूँ जिन्होने यह अवसर मुझको प्रदान कर समाज के लिए अनमोल उपहार प्रदान करने का एक मौका दिया है। यह उनके स्वरचित एवं संकलित ऐसे सशक्त व दिल को छू लेने वाले गीतो का संग्रह है जिनको प्रकाशित करने की चर्चा वे अक्सर किया करते थे।

आज समाज में फैली अनेक भ्रांतिया व रूढ़िवादी विचार धाराओं की अमिट छाप हटाना एक सहज कार्य नहीं है, आशा है यह काव्य संग्रह इस पर खरा उतरेगा। प्रत्येक अग्रवंशी इन रचनाओं से प्रेरित होकर व अग्रोहा के बारे में इनसे सम्पूर्ण जानकारी लेकर एक बार अग्रोहा दर्शन कर अपनी जन्म भूमि को नमन् करेगा।

संग्रह का सार्थक फल तब रहेगा जब प्रत्येक अग्रवंशी समाज के लिए सद्भावना के साथ तन–मन–धन से समर्पित होगा।

आशा है इस काव्य संग्रह को प्रत्येक अग्रवंशी तक पहुँचाने में आपका सहयोग प्राप्त होगा।

सद्भावना के साथ।

आपका

(विजय पाल गुप्ता)
सम्पादक
सहा. लेखा परीक्षा अधिकारी
कार्यालय आर. सी. ए. ओ.,
सी. ए. डी कोटा (राज.)

मन की बात

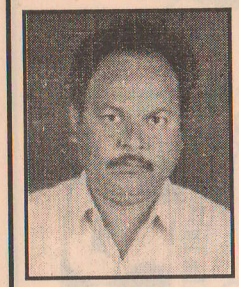

बालपन में परिजनों द्वारा सिंचित संस्कार, लड़कपन की लगन एवं युवा मन की कर्तव्यनिष्ठा! ये सब मिलकर जब एक व्यक्तित्व का निर्माण करते है तभी वह जीवन में बुलन्द ऊँचाईयों को छू पाता है। मेरे परिजनों ने मुझे कुछ इसी रूप में ढाला है। छात्रो के लिए सदैव हितैषी योजनाएं एवं चरित्र निर्माण के साथ उन्नत शिक्षा देना मेरा ध्येय रहा है।

शिक्षण से जुड़े होने की वजह से मैं इस बात को अच्छी तरह से समझता हूँ कि कहानी के बजाय कविता में रचनाकार कम शब्दों में अपनी बात प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर देते हैं एवं छात्र उसे याद भी जल्दी ही कर लेते है।

पूर्व मे ''अग्रवाल सम्मेलन जिला कोटा'' द्वारा प्रस्तुत अग्रवंशज कोटा के प्रकाशन अवसर पर अग्रवाल समाज की गतिविधियों में सह भागिता के लिए मुझे प्रेरित करने वाले मेरे मित्र श्री अशोक पाटनी एवं डां. लोकमणि जी गुप्ता ने हाल ही ''आदर्श अग्रवाल सेवा संस्था'' द्वारा आयोजित दो दिवसीय परिचय सम्मेलन के पश्चात् अपने समाज एवं अग्रसेन जी महाराज पर बने गीतों के प्रकाशन की इच्छा जताई। मेरे उपरोक्त अनुभव के आधार पर समाज में चेतना जगाने के उद्देश्य से यह प्रस्ताव मुझे तुरन्त कहीं गहरे तक भा गया। ''श्री अग्रसेन काव्य संगह'' में डॉ. लोकमणि जी गुप्ता द्वारा संकलित सारी सामग्री मुझे रूचिकर एवं जानकारियों से परिपूर्ण प्रतीत हुई।

विश्वास है आपके मन को भी भायेगी एवं बच्चे इन रचनाओं पर आधारित कार्यक्रम तैयार करेंगे।

इन्ही कामनाओं के साथ।

महेश गुप्ता
निदेशक
(शिवज्योति सीनीयर सैकेण्डरीस्कूल)
इन्द्राविहार, तलवण्डी कोटा

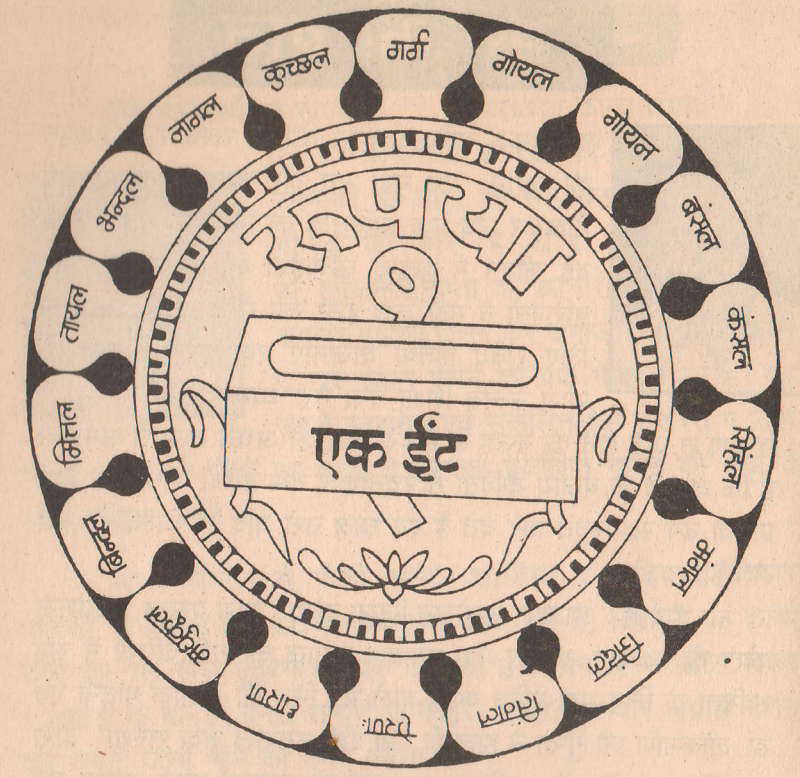

"अग्रवाल गोत्र महिमा"

वैश्य जाति में प्रतिष्ठित – अग्रवाल का वर्ग।
गोत्र अठारह में प्रथम, नोट कीजिए गर्ग॥
नोट कीजिए गर्ग को, कुच्छल, तायल, तुंगल।
मंगल, मधुकुल, ऐरन, गोइनर, बिन्दल, जिन्दल॥
कहीं-कहीं है नागल, धारण, इन्दल, कंसल।
अधिक मिलेंगे मित्तल, गोयल, सिंहल, बंसल॥
ये सब थे अग्रसेन के पुत्र दुलारे।
हम सब उनके वंशज हैं वो पूज्य हमारे॥

कुल देवी महालक्ष्मी जी की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता (मैया) जय लक्ष्मी माता।
तुमको निशि दिन सेवत, हर विष्णु धाता ।। ओम ।।

उमा, रमा, ब्रह्माणी, तुम ही जग माता।
सूर्य चन्द्रमां तुमको ध्यावत, ऋद्धि–सिद्धि धन पाता।। ओम ।।

तुम पाताल निवासिनी, तुम ही शुभ दाता।
कर्म–प्रभाव–प्रकाशिनी, भवनिधी की त्राता।। ओम ।।

जिस घर में तुम रहती, तहं सब सद्गुण आता।
सब संभव हो जाता, मन नही घबडाता ।। ओम ।।

तुम बिन यज्ञ न होवे, वस्त्र न हो राता।
खान–पान का वैभव, सब तुम से आता।। ओम ।।

शुभ–गुण मंदिर सुंदर, क्षीरोदधि जाता।
रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नही पाता।। ओम ।।

महालक्ष्मी जी की आरती जो कोई नर गाता।
उर आनन्द समाता, पाप उतर जाता।। ओम ।।

अग्रवंश के सुप्तभाव को

अग्रवंश के सुप्तभाव को अग्रभूमि पुकारती
अग्रोहा में जाकर कर लो माँ लक्ष्मी की आरती

जिस भूमि के भव वैभव से इन्द्र देव तक जलते थे
अग्रसेन के भीषण तप से देव सिंहासन हिलते थे
ऊंच नीच का भेद हटाकर समता का संचार किया
एक रूपया एक ईंट हर आंगन उसको मिलते थे
अग्रसेन सा पूत पाकर धन्य हुई मां भारती
अग्रोहा में जाकर कर लो मां लक्ष्मी की आरती

जिनकी करी तपस्या तब शम्भू फिर साकार हुये
उनके निर्देशो से राजा, फिर तप को तैयार हुये
महालक्ष्मी ने खुश होकर, धन धान्यो की वर्षा की
नागवंश संधि हुई हर घर मंगलाचार हुये
अग्रसेन के महालक्ष्मी तब से कार्य संवारती
अग्रोहा मे जाकर कर लो मां लक्ष्मी की आरती

कुल की देवी का मंदिर तो भक्तों को फिर से बनाना है।
बीँत गये सुंदर अतीत को पुनः धरा पर लाना है।
उठो अग्रसंतानों अपनी कुल भूमि अग्रोहा को
धर्म कर्म और संस्कृति का शाश्वत केंद्र बनाना है
शक्ति सरोवर की जलधारा तुमको आज पुकारती
अग्रोहा में जाकर कर लो मां लक्ष्मी की आरती

कुलभूमि निर्धन, हम धनपति हाय ये कैसी मगरूरी
कैसे थे अग्रसेन समाजवादी, ये जानना जरूरी
भाई की भाई से समता कर दो पूरी
चलो मिटा दें अग्रोहा में जाकर के यह दूरी
पुत्र तुम्हारी माता रह रह कर निहारती
अग्रोहा जाकर कर लो मां लक्ष्मी की आरती

महाराजा श्री अग्रसेन जी की आरती

जय अग्रसेन हरे, स्वामी जय श्री अग्रसेन हरे।
कोटि कोटि नत मस्तक, सादर नमन करें।।
ओम् जय श्री अग्रसेन हरे .....

आश्विन शुक्ला एकम, नृप वल्लभ जाये।
स्वामी बल्लभ घर आये।
अग्रवंश संस्थापक, नागवंश ब्याहे।।
ओम् जय श्री अग्रसेन हरे.....

केसरिया ध्वज फहरे, छत्र चंवर धारी
स्वामी छत्र चंवर धारी।
झांझ नफीरी नोबत, बाजे तव द्वारे।।
ओम् जय श्री अग्रसेन हरे .....

अग्रोहा रजधानी, इन्द्र शरण आये।
प्रभु इन्द्र शरण आये।
गोत्र अठारह अब तक तेरे गुण गायें।।
ओम् जय श्री अग्रसेन हरे.....

सत्य अहिंसा पालक, न्याय नीति समता।
प्रभु न्याय नीति समता।
ईट रूपया की रीति, प्रकट करे ममता।।
ओम् जय श्री अग्रसेन हरें .....

ब्रह्मा विष्णु शंकर, वर सिंहनी दीन्हा।
स्वामी वरसिंहनी दीन्हा।
कुल देवी महामाया, वैश्य कर्म कीन्हा।।
ओम् जय श्री अग्रसेन हरें .....

अग्रसेन जी की आरती, जो कोई नर गावे।
स्वामी जी सुन्दर गाये।
कहत त्रिलोक विनय से , इच्छित फल पावें।।
ओम् जय श्री अग्रसेन हरे.....

अग्रवाल झण्डा गान

झण्डा लहर लहर लहराए। अग्रवंश की कीर्ति सुनाए।।
केसरिया रंग बहुत सुहाए, त्याग भाव का पाठ पढ़ाए।
सहानुभूति व प्रेम त्याग को, हम सब जीवन में अपनाएं।।१।।

झण्डा .....

अठारह किरणों का गोला, गोत्रों की बोली है बोला।
राज्य व्यवस्था को बतलाकर अग्रसेन की याद दिलाए ।।२।।

झण्डा .....

एक रूपया संग ईंट जुड़ी है, इसमें समता बहुत बड़ी है।
अग्रोहा की याद दिलाए ।।३।।

झण्डा .....

ऊपर नीचे कूल बने हैं, मिले बीच अनुकूल बने हैं।
ऊंच नीच का भेद मिटा कर, समता हम जीवन में लाएं ।।४।।

झण्डा .....

झण्डा गायन

सकल विश्व विजयी है झण्डा हमारा,
लगे रंग केसर का केसा प्राण प्यारा।

अतुल वीरता हमको देता है यही,
कि जब प्रेम दृष्टि से इसको निहारा।

दिलाता है याद उन पूर्वजों की,
जिन्होंने प्रथम इसको था कर में धारा।

भुलाता है आपस के यह द्वेष सारे,
इसे सिर झुकाना है हमाको गवारा।

इसे भूलने से न नैया तिरेगी,
यह है अग्रवंशी चमकता सितारा।

इसे आज मिलकर के ऊंचा उठाओ,
विजय घोष यह अग्रवंशो का प्यारा।

अग्रवाल कहलाता हूं में

अग्रवाल कहलाता हूँ मैं स्वर्ण लिखा इतिहास है।
मेरी जाति के पुरुखों ने जग में किया प्रकाश है।
जय जय अग्रसेन, जय जय अग्रसेन

अग्रसेन से राजा जिनसे देवराज तक कांपा था।
सत्रह बार सिकन्दर को जिसने भुजबल से नापा था।
जिसके कुल में माँ लक्ष्मी का आठों पहर निवास है। ।।१ ।।

देश भक्त पंजाब केसरी, लाल लाजपत राय जहाँ ,
कवियों में सर मौर हमारे भारतेन्दु से और कहाँ
गंगाराम कर गये अपना लाखों का विश्वास है।।२।।

भारत रत्न भगवानदास को हम सब शीश झुकाते हैं।
शादी लाल सरीखे न्यायधीशों के गुण गाते हैं।
कंवर सेन ने बांध बनाकर झुका दिया आकाश है।। ३।।

झुनझुन वाला शिवचन्द देखों काँटन किंग कहाता है।
गूजरमल जी सेठ हमारा, मोदी नगर बसाता है।।
जमनालाल बजाज, जाति को अब तक जिससे आस है।।४।।

प्रयागराज, नन्दलाल को कोई कैसे भूलेगा।
राजा ललित प्रसाद याद कर यह समाज नित फूलेगा।।
ऐसे–ऐसे नर नाहर के हम चरणों के दास है ।।५।।

सद्भावना

हो सब में सद्भावना आओ प्रण हम करें
इस ज्योति यात्रा को आओ नमन हम करें
जला ज्ञान की ज्योति आओ काया कल्प करें
अग्रोहा की माटी हो चन्दन आओ संकल्प हम करें
त्याग, बुराई कटुता को आओ मिलन हम करें
जिनके सदकार्यों से फैले हम इस विश्व में
उन महापुरूष को अर्पित आओ सुमन हम करें

आओ तुम्हे आज सुनायें

आओ तुम्हें आज सुनायें, कहानी अग्रोहाधाम की।
इस स्थल को नमन् करो, यहां मिट्टी है बलिदान की।।

अग्रसेन महाराज ने भी दीप यहां जलाया था।
अपनी अठारह सन्तानों को समता का पाठ पढ़ाया था।।
इन सभी ने देश–विदेश में आज फहराई झन्डी शान की।
इस स्थल को नमन् करो, यहां मिट्टी है बलिदान की।।

व्यवसायी हो, इन्जीनियर हो, आई. ए. एस हो या डॉक्टर।
ये सभी महालक्ष्मी की कृपा से बने हुये है निडर।।
सभी क्षेत्रों में अग्रवालों ने पायी प्रसिद्धि श्रमभारी कर।
मां–बहिनो का भी प्यार मिला है इन्हें बढ़–चढ़ कर।
कहानी है ये अग्रोहा में उपजे सपूत महान की।।

अग्रसेन जी का ज्योति रथ अब आया आपके द्वार है।
अग्रभाई बहिनों का हम पे बड़ा उपकार है।
देश की 'लाज' को अग्रवालों तुम्हें अब बचाना है ।।
अग्रोहा में जाकर तुम्हें दिखानी शक्ति परिवार की।
इस स्थल को नमन् करो, यहां मिट्टी है बलिदान की।।

महाराजा श्री अग्रसेन जयन्ति समारोह

अश्विन शुक्ल १ नवरात्रा स्थापना दिवस

महाराजा श्री अग्रसेन जी का जीवन परिचय

समाजवाद के संस्थापक एवं युग प्रवर्तक महापुरूष महाराजा श्री अग्रसेन अग्रवाल जाति के संस्थापक ही नही वरन् ऐसे पौराणिक ऐतिहासिक पुरूष थे जिन्होने भारत की शाश्वत संस्कृति का संवर्द्धन कर अमर कीर्ति प्राप्त की। भारत की पूज्य धरा के इस महान सपूत को किसी जाति विशेष तक सीमित करना उचित नही है। भगवान राम, कृष्ण, बुद्ध आदि विभूतियों की भांति महाराजा अग्रसेन का जीवन भी त्याग, तपस्या व मार्यादाओं से पूर्ण है। इस आलोक पुरूष ने अनेक अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत किये यथा हिंसा का परित्याग, अहिंसा पालन, समता, मानवता, कर्म पुरूषार्थ तथा समन्वय की भावना। महाराजा श्री अग्रसेन ने " सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः " का सिद्धान्त अपनाया।

आधुनिक मूल्यों, बोधों, संवेदनाओं, प्रश्नों एवं आवश्यकताओं की कसौटी पर परखे तो महाराजा श्री अग्रसेन के सिद्धान्त एवं आदर्श हर युग के लिए समान हैं। कृषक जीवन, श्रम महिमा, शोषण विहीन समाज, पशु बलि विरोध, ऊंच–नीच के भेदभावों का उन्मूलन, नारी चेतना, अनेकता में एकता आदि के आधार पर महाराजा श्री अग्रसेन ने अपने गणराज्य में समाजवादी व्यवस्था की स्थापना की, जहां व्यक्ति का न तो शोषण होता था और ना ही विभिन्नता।

अहिंसा की स्थापना : महाराजा श्री अग्रसेन ने हिंसा की स्थापना के लिए अभूतपूर्व त्याग किया उन्होंने युद्ध के स्थान पर अहिंसा की प्रतिष्ठा की। निज स्वार्थ त्याग कर परमार्थ का मार्ग अपनाया उन्होने अश्वमेघ यज्ञ की पूर्ति के लिए अश्व वध की परम्परा की अस्वीकार कर समूचे याज्ञिक वर्ग का क्रोध सहा। जीवन पर्यन्त वे अपने संकल्प पर अटल रहे। उन्होने सारे वैश्य समुदाय को अपना कर संगठित किया और नये जीवन मूल्यों की स्थापना की।

आदर्श : महाराजा श्री अग्रसेन एक आदर्श नृपति थे। वे अपने राज्य का विस्तार युद्ध से नहीं वरन् प्रेम व परस्पर सहयोग से चाहते थे। उनकी सेना युद्ध के लिए नहीं वरन् स्वदेश रक्षार्थ थी, विश्व मैत्री इनका सिद्धान्त था।

समाजवाद के प्रवर्तक : महाराजा श्री अग्रसेन की " एक ईंट एक रूपया" की क्रांतिकारी नीति तो सर्वविदित है और सच्चे समाजवाद का प्रतीक है। महाराजा श्री अग्रसेन के राज्य से प्रेरणा लेकर उन्ही के सिद्धान्तो के आधार पर स्वतंत्र भारत का मूलभूत संविधान तैयार किया गया जिसकी पालना करने को प्रत्येक भारतीय वचनबद्ध है।

जन्म : ऐसे महान और उच्च आदर्शो के संस्थापक महाराजा श्री अग्रसेन का संक्षिप्त जीवन परिचय भी जानना चाहिये। वैसे तो इतिहास सदा अन्वेषण का विषय रहा है। आज रामायण के राम और सीता पर भी व्यंग किये जा रहे है। परन्तु सर्वमान्यतानुसार आपका जन्म महाभारत कालीन माना जाता है। वे प्रताप नगर के राजा वल्लभ के पुत्र थे। महाराजा श्री अग्रसेन के जन्म के समय ही पण्डितो ने भविष्यवाणी की कि यह लड़का बड़ा होकर देश में बड़ा नाम कमायेगा, इसके वंश के लोग सदियों तक इसके नाम की पूजा करते रहेंगे। वे बल विद्या रणकौशल के अद्वितीय यौद्धा एवं आरम्भ से ही कुशल प्रशासक तथा सभी आवश्यक गुणों के धनी थे।

अग्रोहा राजधानी – हरियाणा में हिसार जिले से 20 किलोमीटर दूर सिरसा राजमार्ग पर स्थित अग्रोहा पूर्व में एक घनी बीहड भूमि थी जिसे महाराजा श्री अग्रसेन ने प्रयत्नों व पराक्रमों से अपने उन्नत राज्य की राजधानी का रूप दिया । खुदाई में प्राप्त वहां पर पुरातत्व महत्वपूर्ण अवशेष भी उस अग्रोहा की समृद्धि का बखान करते है। सुरक्षा की दृष्टि से उपयुक्त स्थान मान कर ही अग्रसेन जी ने वहां पर अपना शासन किया था। उन्होनें इस नवीन गणराज्य की स्थापना के लिए शक्ति और धन हेतु भगवान शिव और माता लक्ष्मी जी की आराधना करके देवीय शक्ति प्राप्त कर राज्य को सुदृढ बनाने के लिए नागवंश से वैवाहिक सम्बन्ध स्थपित किये। बीहड़ के घने जंगल कटवा कर तालाब का निर्माण करवाया, बाग बगीचे बनवाये। नगर

की सुरक्षा हेतु परकोटा बनावाया एवं नगर सौन्दर्यकरण हेतु 4 मुख्य सड़कों से नगर को विभक्त कर सड़कों के दोनो ओर भव्य इमारतें एवं प्रशासन हेतु विभिन्न भवनों का निर्माण करवाया। महाराजा श्री अग्रसेन जी का 'गोत्र' विभाजन तो सर्वविदित है ही।

मां लक्ष्मी की आराधना : आपने महालक्ष्मी जी की कठोर आराधना की। परिणास्वरूप देवी ने प्रसन्न होकर अग्रवंश की कुल देवी बनना स्वीकार किया। अग्रोहा में महाराजा श्रीअग्रसेन ने नगर के मध्य कुलदेवी लक्ष्मीजी का विशाल मन्दिर बनावाया। महाराजा अग्रसेन के शोर्य की चर्चा सम्पूर्ण चराचर में थी, वे अपनी प्रजा को सन्तान के रूप में मानते थे तथा किसी में किसी प्रकार का भेदभाव नहीं रखते थे। उनके राज्य में हर तरफ वैभव व सुख शांति थी।

सक्षिप्त में:

धन्य धन्य है नृपवर पावन, अमर रहेगा नाम।
याद करेंगे त्याग तपस्या, शत शत तुम्हें प्रणाम ।।
भारतवर्ष सुखी था तब, करता था अग्रसेन का गान।
राम राज्य का भाव दिलाता, सब जन एक समान ।।

महाराजा अग्रसेन जयन्ती

महाराजा श्री अग्रसेन जी की जयन्ती प्रत्येक वर्षआश्विन शुक्ल एकम् तदनुसार नवरात्रा स्थापना दिवस पर धूमधाम से मनाई जाती है। जयन्ति पर्व मनाने के विशेष लक्ष्य होते है।, ध्येय होते हैं, साथ ही हम इस दिन यह प्रण भी लें कि महाराजा श्री अग्रसेन के एक आदर्श की हम भी पालना करने में सक्षम बनें तभी हमारा जयन्ती मनाने का लक्ष्य सफल होगा। अग्रवाल समाज को यह जयन्ती समारोह "बुराई छोड़ो" दिवस के रूप में मनाना चाहिए। दहेज छोड़ो, कुरीतियां छोड़ो, अंधविश्वास छोड़ो, फिजूलखर्ची छोड़ो, रूढिवादिता छोड़ो, अश्लील नृत्य छोड़ो, आपसी वैमनस्यता छोड़ो।
ये सब छोड़ना ही वास्तविक जयन्ती मनाना है। जब ये सब छूट जायेंगे तो समाज में स्वतः ही स्वर्ण युग आ जायेगा।

अग्रसेन जयन्ती कैसे मनायें

किसी भी महोत्सव जयन्ती आदि के मनाये जाने के प्रमुख ध्येय होते है जैसे :

१. उन महापुरूषों की स्मृति को अक्षुण्य बनाना।
२. उनकी समाज सेवाओं के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करना।
३. उनके सिद्धान्तों को अनुकरण द्वारा व्यवहारिक बनाना।
४. हम ऐसे महापुरूषों के वंशज हैं, इस भावना से गौरवान्वित होना।
५. स्वयं को उनकी योग्य संतान कहलाने में सक्षम बनाना।

जयन्ती पर हम क्या कर सकते है?

१. सामूहिक मिलन समारोहों का आयोजन करना, समाज को एक वृहद परिवार मानकर एक दूसरे के सुख–दुःख के भागीदार बनाना।
२. सामाजिक समस्याओं यथा विवाहस्थल, विद्यालय, मन्दिर, धर्मशाला, चिकित्सालय, वृद्धाश्रम, छात्रावास आदि के निर्माण का संकल्प लें, उनके लिए धन एकत्र करना।
४. समाज के कमजोर वर्ग (बेरोजगारों को कार्य दिलाना, निर्धन, असहायों की सहायता, विधवाओं, परित्यक्ताओं के विवाह, छात्रों को अध्ययन हेतु साधन उपलब्ध करना) की सहायता के लिए प्रयत्न करना।
५. शोभा–यात्रा एवं झांकियों के साथ अधिकाधिक अग्रपरिवारों की उपस्थिति ही प्रभावशाली हो सकती है।
६. बाजारों में सजावट (तोरण द्वार, पताकाएं, स्वागत –सत्कार, पुष्पवृष्टि) तथा घरों पर रोशनी द्वारा मन के उल्लास को प्रकट करना।
७. जयन्ती को सामाजिक पर्व के रूप में मनाना, परिवार में सभी नवीन वस्त्राभुषण धारण करें, घरों में अच्छा भोजन बनें, सजातियों से गले मिलें, **जय श्री अग्रसेन** बोल कर अभिवादन करें नववर्ष की भांति शुभकामनाओं के कार्ड

भेजें। दुकानों के बोर्डों, ... पैड, पेपर्स पर **'जय श्री अग्रसेन'** लिखवाये या महाराजा अग्रसेन का चित्र बनवाएं। सामाजिक विषयों पर वाद-विवाद, भाषण लेख प्रतियोगिताओं आदि का आयोजन।

९. समाज की प्रतिभाओं को प्रोत्साहित, सम्मानित करना।

१०. **सहभोज मेलों आदि का आयोजन :** कार्यक्रम को सुरूचिकर बनाने के लिए अग्रसेन महाराज की कथा, कीर्तन, भजन अवश्य हों, इससे उनके चारित्रिक गुणों, महानता की जानकारी मिलेगी। प्रतिवर्ष अग्रवाल समाज से संबंधित एक- एक महापुरूष लाला लाजपतराय जी, कवि भारतेन्दु हरिशचन्द्र जी, सेठ श्री जमनानलाल बजाज, डॉ. राममनोहर लोहिया जी, माता शीतला सती आदि के एक ही आकार के चित्र बनवायें।

११. प्रत्येक घर में अग्रसेन जी का तैयार किया गया चित्र लगाने का प्रयत्न करें।

१२. सामामजिक कार्यक्रमों में महिलाओं को आगे लाएं।

अग्रसेन महाराज की जय

अ अमन पुजारी जन-हितकारी समता लाने वाले।
ग्र ग्रहण सदा सद्गुण करते थे सज्जन के रखवाले।।
से सेवा सहनशीलता जिनमें हरदम रही समाई।
न नहीं भुलाया कभी दीन को, समझा अपना भाई।।
म मनशा मन में रही निरन्तर, दुःख भाई के काटूँ।
हा हालत बिगड़ी सदा सवारूं, सुख दुःख सबके बाटूँ।।
रा राम कृपा से सबके मन में, रहमदिली थी छाई।
ज जब देखें दे ईंट रूपया, मदद करें सब भाई।।
की कीर्ति फैली अग्रसेन की, जाने आज खुदाई।
जय जय-जय अग्रसेन राजा की, जिनकी धन्य कमाई।

अब जाग उठो हे अग्रवाल

अब जाग उठो हे अग्रवाल, श्री अग्रसेनजी का दिन आया।
जिस दिन की रही प्रतीक्षा थी वह दिन अपने सन्मुख आया।।

श्री सूर्य उदय होने आये, शशि तारागण छिप छिप जाये।
यह पवन सुगंधित लहराये, श्री अग्रसेनजी का दिन आया।।१।।

भग गया अंधेरा दिन आगे, अरु पेड़ों पर पक्षी जागे।
सब धर्म, कर्म में अनुरागे, श्री अग्रसेनजी का दिन आया।।२।।

अब रैन गई क्यों सोते हो, सोने में मजा क्यों खोते हो।
उठकर संग क्यों ना होते हो, श्री अग्रसेनजी का दिन आया।।३।।

हम हिलमिल एक कहायेंगे, सोतों को शीघ्र जगायेंगे।
आलस तज नाम कमायेंगे, श्री अग्रसेनजी का दिन आया।।४।।

शुभ पर्व आपका आया है, उत्साह उमंगे लाया है।
नूतन सन्देश सुनाया है, श्री अग्रसेनजी का दिन आया।। ५।।

जातीय संगठन अपनायें, खुश हो कर सब नाचें गायें।
सब 'अग्रवाल समाज' समारोह में आयें, श्री अग्रसेनजी का दिन आया।। ६।।

जागो जागो अग्रवंशियों

जागो जागो अग्रवंशियों बीत चुकी रात है।
आया प्रभात है जी आया प्रभात है ।। टेर।।
बीत चुकी रात सारी अंधियारी काली,
पूरब में उदय हुई देखो कैसी लाली,
देखो कैसी लाली।
गाते हर्षाते वे, जिनमें पुरुषार्थ है
।। आया प्रभात है ।। १।।

तुमसे भी पिछड़े थे वे भी जागे सारे हैं,
आगे बढ़ो जोश से, यों देते जाते नारे हैं।
तुमको ना चेत हुआ, कैसी ये बात है
।। आया प्रभात है।। २।।

छोड़ खोटी रूढ़ियों को जाति दुख टालना,
उन्नत हों आप, ऐसे नियमों को पालना,
करके दिखाने का वक्त लगा हाथ है
।। आया प्रभात है।। ३।।

विजय मिलेगी तुम्हें और पूजे जाओगे,
सुयश, सुजयनाद जग में गुंजाओगे,
जग में गुंजाओगे।
''अग्रवाल समाज'' तो सब ही के साथ है। ।
। आया प्रभात है।। ४।।

अब चेत उठो नरनार

अब चेत उठो नरनार, अग्र सरदार, होश में आवो।
आलस को दूर भगावो ।। टेर।।

आलस्य बड़ा दुखदाई है, यों वेद शास्त्र में गाई है।
उठ कमर कसो, झट नींद त्याग तुम आवो। आलस को ।। १।।
तुम बणिक पुत्र कहलाते हो, क्षत्रीपन भूले जाते हो।
इतिहास दे रहा साख, न नाम डुबावो। आलस को ।। २।।
अग्रोहा राज्य तुम्हारा था, विख्यात विश्व में न्यारा था।
श्री अग्रसेन की न्याय नीति अपनावो।आलस को ।। ३।।
वो भ्रातृ–प्रेम क्यों बिसराया, सब साम्य–योग को अपनाया।
निर्धन भाई को फिर से गले लगावो।आलस को ।। ४।।
विद्यापति, जप, तपधारी हो, विष्णु के परम पुजारी हो।
लक्ष्मी से कह दो एक बार फिर आवो।आलस को ।। ५।।
तुम इन्द्रजीत कहलाते हो, तब अब काहे घबराते हो।
अज्ञान, अविद्या की जड़, खोज मिटावो।आलस को ।। ६।।
यह भारत देश हमारा है, हमको प्राणों से प्यारा है।
इसके हित तन, मन, जीवन बली चढ़ावो। आलस को ।। ७।।
हे अग्रवंश के मतवालो, अपने प्रण को पूरा पालो।
वासुकी राव परखे तो मत घबरावो।आलस को ।। ८।।
केसरिया ध्वजा उठानी है, कायरता दूर भगानी है।
श्री ''अग्रवाल समारोह'' में हिलमिल सब आवो। आलस को ।। ९।।

अग्रवालों उठो वक्त खोओ नहीं

अग्रवालों उठो वक्त खोओ नहीं,
बहुत सोये हो गलफत में, सोओ नहीं,
देश अपने में, जिनका अटल राज्य था,
वैश्य जाति के सिर का जो सरजात था,
थाती उनसे मिली, ये भुलाओ नहीं ।। अग्र.।।

मातृ लक्ष्मी का हमको यह वरदान है,
एकता से जो रहता वह धनवान है,
धन के चक्कर में हम आप ऐसे पड़े,
क्या थे, क्या हो गये, भाई–भाई लड़े,
फूट के बीज अब और बोओ नहीं ,
इस दुश्मनी को आगे बढ़ाओ नहीं।।अग्र.।।

क्या कमी है, विधाता ने सब कुछ दिया,
धन दिया, बल दिया, बुद्धि दी, गुण दिया,
कमी है बड़ी, यह कमी खल रही,
आपसी फूट अपने ही घर पल रही,
फूट जड़ से उखाड़ो रे, सोओ नहीं । ।अग्र.।।

अग्र के वंशजों, सदाचारी बनो,
अग्रगामी सदा अब भी आगे बढ़ो,
छोड़ दो दुश्मनी, मित्रता सीख लो,
खो दिया जो, उसे बढ़कर हासिल करों,
उपनी करनी पै अब आगे रोओ नहीं ।। अग्र.।।

दान देने की हममें सबसे ताकत बड़ी,
'भामाशाह' से जुड़ी है हमारी कड़ी,
जिनके सहयोग से सारी सेना लड़ी,
उसके वंशज हैं, फिर फूट कैसे पड़ी,
फूट के बीज आगे को बोओ नहीं।। अग्र.।।

जय जय बोलो, सब दिल खोलो

जय जय बोलो, सब दिल खोलो,
ये आया शुभ त्यौहार रे, श्री अग्रसेन महाराजा का ।। टेर।।
आश्विन शुक्ला प्रतिपदा ये आज जयन्ती आई,
नाचें, गायें, मोद मनायें, पुलक पुलक सब भाई,
देखलो पुलक–पुलक सब भाई।
मधुरस घोलो, मिलकर बोलो,
सब अग्रवाल सरदार रे।। श्री अग्रसेन .....।।१।।

प्रेम प्रीति का पाठ पढ़े हम भेद भाव बिसरायें,
आपस का सब द्वेष मिटा कर सभी एक हो जायें।
प्रेम से सभी एक हो जायें।
मत डोलो, सुगठित हो लो,
सब जाती के नर नार रे ।। श्री अग्रसेन .....।।२।।

अग्रवंशियों अग्रवंश की महिमा सबसे न्यारी,
अग्रोहा के अटल राज्य को माने दुनिया सारी,
अभी तक जाने दुनिया सारी ।
अँखियाँ खोलो, दिल में तोलो,
है तुम पर सारा भार रे ।। श्री अग्रसेन.....।। ३।।

आया है शुभ अवसर भई व्यर्थ न इसे गंवाना,
समय गया फिर हाथ न आये पड़ता है पछताना,
भाइयों पड़ता है पछताना।
अमृत घोलों, मन को धोलो,
करता है "समाज" पुकार रे ।। श्री अग्रसेन .....।।४।।

जागो जाति भाई

जगो जाति भाई, जाति जागने आई
जागो जागो जाती भाई, अब तो निद्रा त्याग दो,
जाति बन्धु जगाने आये, अपना कुछ अनुराग दो।
हेजी जयन्ती मन भाई।। जाति जगाने आई।।१।।
मत पोढो, आलस छोड़ो जाति बन्धु जगाते हैं,
जो जागे सो नाम कमावे, गाफिल गोते खाते हैं।
हेजी सोचलो मन माँही ।।जाति जगाने आई।।२।।
शुभ अवसर यह आया भाई, व्यर्थ न इसे गँवाओ तुम,
समय गया फिर हाथ न आये, फिर पीछे पछतावो तुम।
हेजी उंमगें हैं छाई ।। जाति जगाने आई।।३।।
''अग्रवाल समाज'' शुभ चिनतक हो सबको जगाता है,
प्रेम करो अब, द्वेष हरो सब, ऐसा बताता है।
हेजी अंग मिल कर भांई ।। जाति जगाने आई।।४।।

अग्रवंश से अग्रवाल हो

'अग्रवंश' से अग्रवाल हो, अग्रदूत बनो जयन्ती के।
'अग्रसेन' की सन्तति हो तुम, अग्र–प्रदर्शक हो धरती कै।।
भारत के निर्माण कार्य में, अग्रवंश का योगदान है।
भारत का इतिहास बताता, अग्रवंश का मान है।
भारत–रचित समाजवाद में, अग्रवंश की ज्योति जगा दो।
'ईट–रुपैये' के दर्शन से, अर्थ विषमता शाप मिटा दो।।
पर दहेज के भूत–प्रेत पर, शुभ विवाह पर, मोल भाव पर।
यश–वैभव पर आडम्बर पर, अहम् न हो, हो स्नेह भाव पर।।
कितने ही घर उजड़ गए हैं, कितनी हीं बालाएं बिछड़ी।
चांदी के टुकड़ों के कारण, कितनी ही मुस्कानें उजड़ीं।।

हाथों में हाथ मिलाते चलो

हाथों में हाथ मिलाते चलो, जाती के फूल खिलाते चलो,
रास्ते में आवे जो भाई सखे, उनको गले से लगाते चलो।
जाती के फूल ।।
अग्रसेन के वंशज हैं हम, अग्रवाल कहलाते हैं,
अग्रोहा के राज्य चिन्ह भी अब तक पूजे जाते हैं।
वही इतिहास बनाते चलो। जाती के फूल ।।
वीर सिकन्दर तुमसे लड़कर मांग चुका है पानी,
अरे संगठन में बल होता, झूंठी नहीं कहानी।
पुरूषत्व अपना निभाते चलो। जाती के फूल।।
ईंट रूपये की गाथा ने हमको एक बनाया
डोल गया इन्द्रासन हमसे, हमने काल नचाया।
राह के रोड़े हटाते चलो। जाती के फूल।।
आज समय ने पल्टा खाया भूल गये सब बातें,
अपना और पराया भूले, नोटों को अपनाते।
स्वार्थ को दूर भगाते चलो। जाती के फूल।।

हे अग्रवंश के बहादुरों

हे अग्रवंश के बहादुरों, दुनियां में कुछ बनके दिखलाओ।
आने वाली हर मुसीबतों से, पहाड़ बनके टकराओ।।
हमारा जीवन सार्थक होगा, यदि हम भामाशाह बन जाएंगे।
आने वाली पीढ़ी के लिये, नये प्रेरणा स्त्रोत कहलाएंगे।।
दहेज रूपी अजगर को, समाज से तिरस्कृत करना है।
जो आदर्श विवाह करें, समाज में पुरस्कृत करना है।।
अग्रोहाधाम है तीर्थ हमारा, घर–घर अलख जगाऐंगे।
समाज में फैली कुरूतियों को, घर–घर जाकर मिटायेंगे।।
हमें पूरे भारतवर्ष में , शांति का पाठ पढ़ाना है।
भारत में वैश्य समाज को रक्षा का मार्ग दिखाना है।।

ये शुभ दिन आया

ये शुभ दिन आया भारी, दिल में बहार है।
महाराजा अग्रसेन का, यह शुभ त्यौहार है।। टेर।।

चांदी की सजी सवारी,
जिसमें है छत्रधारी,
संग आये नर औ नारी,
गा रहे जयकार हैं ।। महाराजा।।१।।

श्री अग्रोहा के राजा,
संग मेंहै सभी समाज,
जहां बज रहे नौबत बाजा,
शोभा अपार है ।। महाराजा।।२।।

क्या तेज और तपधारी,
महाराज न्याय अवतारी
जावे जिन पर बलिहारी,
ये सब परिवार है ।। महाराजा।। ।।३।।

जिन पर लक्ष्मी की माया,
विष्णु ने भी अपनाया,
जिनसे 'पौरष'थर्राया,
होकर लाचार है ।। महाराजा ।।४।।

सभी अग्रवाल समाज " गावे,
सरदारो को समझावे,
ये सबके मन में भावे,
करलें सब प्यार है ।। महाराजा ।।५।।

आज तो जयन्ती प्यारी आई

आज तो जयन्ती प्यारी आई तो बहार है,
चारों दिशि छाय रही खुशियाँ अपार है।।
चाँदी के आसन पे बैठे महाराज है,
मस्तक पे सोहे क्या सोने का ताज है,
कानों में कुण्डल औ हिवड़े पे हार है।
चारों दिशि छाय रही खुशियाँ अपार है।।१।।

ढोलक, नगाड़े, शहनाई की तान है,
आगे–आगे बाज रहे नौबत, निशान है,
मस्ती में झूम रहे सारे नर–नार हैं।
चारों दिशि छाय रही खुशियाँ अपार है।।२।।

डंडे बजाय रहे, नाच रहे प्यार से,
खेल रहे बरछी ओ भाले तलवार से,
दर्शक गणों से भरे, चारों बाजार है।
चारों दिशि छाय रही खुशियाँ अपार है।।३।।

झण्डा केसरिया कर में उठा के,
महाराजा की जय जय मनाके,
बढ़ते रहें बस ये ही विचार है।
चारों दिशि छाय रही खुशियां अपार है।।४।।

कंधे से कंधा मिलाते चलेंगे,
हाथों में हाथ डाले आगे बढ़ेंगे,
''अग्रवाल समाज' की ये ही पुकार है,
चारो दिशि छाय रही खुशियाँ अपार है।।५।।

अग्रसेन की हम संतान

अग्रसेन की हम संतान, करते हैं नित गौरव गान।
उनके आदर्शों को मान, जीवन में हम बनें महान।

मिल–जुलकर हम प्रेम बढ़ावे, द्वेष–भाव को दूर भगावें।
समता निज जीवन में लायें, अहं भाव है झूठी शान।।

सादा जीवन उच्च विचार, यह हो जीवन का आधार।
मन से कर आदर सत्कार, यथा–शक्ति हम देवें दान।।

दइेज दिखावा या प्रर्दशन, करते हैं जाति का मर्दन।
झुकती आज इसी से गर्दन, इससे जल्दी पावें त्राण।।

करनी व कथनी का अंतर, आदर्शों को कर छूमन्तर।
धधक रहा अन्दर से अन्तर, उसकी ध्वनि को लें पहिचान।।

संयम निज जीवन में लावें, अनपढ़ता का पाप मिटावें।
वृक्षारोपण को अपनावें, सुनें राष्ट्र का यह आह्वान।।

अग्रसेन आदर्श हमारे

अग्रसेन आदर्श हमारे, हमको प्राणों से प्यारे।
नृप वल्लभ के राजदुलारे, अग्रवंश के ध्रुव तारे।।

शौर्य पराक्रम की प्रतिमा थे, सत्य–अहिंसा के पालक।
साम्य योग के शिल्पकार थें, अग्रवंश के शुभ चालक
समता के आधार बिन्दु थे, अग्रवंश के ध्रुवतारे ।।१।।

सिद्धांतों के मौन व्रती थे, रिद्धि–सिद्धियों के दाता।
अग्रवंश की दिव्य दृष्टि थे, शुभ संकल्पों के दाता।।
भीष्म पितामह आदर्शों के, अग्रवंश के ध्रुव तारे ।।२।।

अग्रोहा के शासक थे वे, अग्रवंश के संस्थापक।
न्याय–नीति की गरिमा थे वे, गोत्र प्रथा उनकी व्यापक।।
चिन्तन के अभिनव स्वरूप थे, अग्रवंश के ध्रुव तारे।।३।।
अग्रसेन आदर्श हमारे हमको प्राणों से प्यारे।।

अग्रवालों की गौरव–गाथा

अग्रवालों का इतिहास भरा, प्रेम भाई चारे से।
एक भाई उठ जाता था, सब भाईयों के सहारे से।।
दीन दुखियों की विपदाओं में हम सदा तैयार रहे।
भूखे, प्यासे नंगो को हम देते दान हर बार रहै।

बनाकर, कुंआ, बावडी, धर्मशाला, करते हम पर उपकार रहे।
खोलकर स्कूल, कालेज, पाठशालाएं करते विद्या का प्रसार रहें।
कोई खाली नही जाता था हमारे घर द्वारे से,

अग्रवालों का इतिहास भरा प्रेम भाई चारे से
जब देश पर संकट आया, तन मन धन देवें अग्र समाज।
देशभक्त लाजपतराय लोहिया दिये त्याग मूर्ति जमुनालाल बजाज।
साहित्यकार भारतेन्दु, मैंथिलीशरण दिये, जिनपर है भारत को नाज।

बड़े–बडे उद्योग लगाकर, समृद्ध किया देश व समाज।
अग्रवालों का बच्चा–बच्चा, देश हित की बात विचार से,
अग्रवालों का इतिहास भरा प्रेम भाई चारे से

एकता की कामना

मैं रोज अपनी छत से देखता हूँ, सितारों को
आकाश में उड़ती हुई पक्षियों की कतारों को

कितना अनुशासित है पक्षियों का जीवन, कितना मधुर है उनका गायन,
कितने निराले है उनके ढंग, कितने मनोहारी हैं उनके रंग

काश अग्रवंशी भी सीख ले उनसे एकता की भावना
हर पल रहती है, मुझे यही एक कामना

सबके लड़के सबकी लड़की

सबके लड़के, सबकी लड़की, सबको ब्याह रचाना है।
अहंकार को छोड़ो भाई, यह दिन सबको आना है।।
जाति–कुल की मर्यादा को, सुन्दर सबल बनाना है।
सबके लड़के, सबके लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

कुल अनुरूप वधु–वर खोजो, देखो–भालो, ब्याह करो।
आडम्बर को छोड़ो भाई, सुन्दर सादा ब्याह करो।।
जन्म–जन्म के इस बन्धन में, सबको, ही बंध जाना है।
सबके लड़के, सबकी लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

घर व्यापार पढ़ाई देखो, लड़के–लड़की दोनों की।
सामंजस्य जहाँ हो जाये, शादी कर दो दोनों की।।
सामाजिक मर्यादा है यह, सबको इसे निभाना है।
सबके लड़के, सबके लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

रीति–रिवाज के चक्कर छोड़ो, रस्में कुछ तो खत्म करो।
अपव्यय पैसे और समय का, भाई कुछ तो खत्म करो।।
व्यर्थ दिखावा और प्रदर्शन, मिलकर दूर हटाना है।
सबके लड़के, सबकी लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

तड़क–भड़क से गाजे–बाजों की संख्या में कमी करो।
सौम्य भाव के चलें बराती, गरिमा हित कुछ यत्न करो।।
मदिरा पीना, नाच नाचना, आदत बुरी छुड़ाना है।
सबके लड़के, सबकी लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

खान पान में पकवानों की बढ़ती वृद्धि दूर करो।
पाचन योग्य बने खाना इस बात पर गौर करो।।
पेसे का न हो दुरपयोग इसी बुराई को हटाना है।
सबके लड़के, सबकी लड़की, सबको ब्याह रचाना है।।

रिश्तेदारी जो जोड़ने चले

रिश्तेदारी, जो जोड़ने चले
दहेज के फेर में,
मन अभी से तोड़ते चले
पुत्रो! आपके भी तो होगी ?
फिर क्यों केवल
पुत्र के बल नाक चढ़ाये चले ?
कही आप उनमें तो नही
जो इस दानव के डर से
पल्लवित होने के पूर्व
आंचल मे ही
''नन्ही'' को चटकाते चले !
और
जिससे डर रहे थे
आज उसी 'दानव' को
देत्य बनाने चले।
संस्कृति में जो था, मधुरता का प्रतीक।
दर्शाता था परिवार का, बेटी के प्रति रिश्ता सटीक।
वो समर्पण और प्रेम
जो बन गया आज क्रेता व विक्रेता का नाता।
मैं, इसके लिए केवल आप ही को दोष नहीं देता।
क्योकि बन गये है कुछ बन्धु 'दानव' पालक
क्यो भागते हैं वे
केवल आपके ''लाडले'' के लिए ?
क्या और नहीं नन्हे 'शावक' !
बाजार का तो नियम ही यही है।
जो कम होगा – मंहगा होगा।
कुछ गूढ़ छिपा है इसमें
याद करो और सोचो अपने अमानुष कृत्यो को
कि वो नन्ही कली ही अगर कहीं न महकेगी ।
तो आपके लाडले का क्या विवाह होगा ?

जो बर्बर दहेज लेता है

जो बर्बर दहेज लेता हो, जिसे न किंचित प्यार है।
उसका दान दक्षिणा तीर्थ करना सब बेकार है।।

कैसे उठे समाज यहां पर छाई ऐसी भूल है।
लड़के बेच बड़ा बनने का, जिनका बना उसूल है।।

दया नहीं आती है जिनको कन्याओं की आह पर।
कुछ नहीं देखते हैं जो बस पैसों की चाह पर।।

बैलों जैसे लाल बेचना, जिनका अब व्यापार है।
दान दक्षिणा तीर्थ करना ऐसो का बेकार है।।१।।

जब तक पिंड नहीं छुटेगा उनका ऐसे कर्म से।
उनकी गरदन झुकी रहेगी सर्वदा हमेशा शर्म से ।।

रोएगा जब उसकी बेटी पर खुद नंबर आएगा।
मांग नहीं पूरी होगी तब, मांग न भरने पाएगा।।

होगा जब अनमोल मेल तब होगी हाहाकार है।
उनका दान दक्षिणा तीर्थ करना सब बेकार है।।२।।

अतः चाहता जो समाज का सचमुच में उत्थान हो।
धर्म संस्कृति मानवता का और अधिक निर्माण हो।।

तो उसको सरस लाजमी ऐसा नूतन मोड़ ले।
जो दहेज लेता है, उससे हाथ मिलाना छोड़ दे।।

ऐसा विश्व करे वह खुद ही हो जाए लाचार है।
तभी देश के जन जीवन में होगा नया सुधार है।।३।।

दिन के फेरे शुरू करो

अग्र बन्धुओं उठो जरा, और रूढिवादिता दूर करो।
सौ मर्जों की एक दवा है, दिन के फेरे शुरू करो।

बुरे कर्म जितने भी हैं, वो अंधियारे में होते है।
अतिशबाजी, शराब, भगडा ककर्म की जड़ होते है।

लड़के–लड़कियाँ संग–संग नाचें, होश हवाश सब खोते है।
चरित्र हीनता फैलाकर वो कुल का नाम डूबोते हैं।

अपने हित की बात जरा कुछ हृदय में मंजूर करो।
अग्र बन्धुओं उठो और रूढ़िवादिता दूर करो।।

समय दिया है आठ बजे का, कर इन्तजार सब थकते हैं।
नौ, दस ग्यारह बजे देखकर, लोग निराश लौटते हैं।।

झगड़ा करते आधी रात में, खाना ठण्डा खाते हैं।
बदहजमी हो जाती है और वे बीमार पड़ जाते हैं।।

अब तो यह गन्दे रिवाज, सब जड़ से चकना चूर करो।
अग्र बन्धुओ उठा जरा और रूढिवादिता दूर करो।।

दिन के फेरे करने से एक नया हर्ष छा जाता है।
अतिशबाजी और लाईट का धन अपव्यय बच जाता है।।

रात ठहरने के झंझट से, हर एक छुट्टी पाता है।
बिस्तर कपड़ों की त्यारी का बोझ दूर हो जाता है।।

ऐसी अच्छी बातों का तो प्रचार जरूर करो।
अग्र बन्धुओं उठो जरा और रूढिवादिता दूर करो।।

सुबह को जाना, शाम को आना, दिन का विवाह रचाने में।
दिन के फेरे स्वयम्बर से होते थे पूर्व जमाने में।।

शाम का खाना, पच न पाना उसे दूर करो।
दिन के स्वयंवर में ही सादा खाना शुरू करो।।

लाखों कन्याओं के ऊर से

लाखों कन्याओं के ऊर से यह निकली आवाज है।
जो दहेज लेता है उसके घर पर जाना पाप है।
खाना–खाना पाप है।

पता तुम्हे किस किसने खींचा यह दहेज का चीर है।
पता तुम्हे! कितनी आंखों में आंसू की तस्वीर है।
कितनी मांगे सिर्फ मांग से बिना मांग की हो गई ।
कितनी बहनें विष पीकर दहेज की दिवारों पर सो गई।
कहना होगा जब तक इसका हो न सके इन्साफ है।
जो दहेज लेते है, उन पर इस हत्या का पाप है।
हां सचमुच यह बात है।

एक मनुज का नहीं मनुजता का यह सारा कोढ हैं।
कन्याओं का नाम मिटाने वाला पापी मोड़ है।
कितना पतन हुआ मानव का यह अचरच की बात है।
अभिमन्यु जनने वाली नारी पर यह आघात है।
युवकों उठो बताओ, जीवित अभी यहां इन्साफ है।
जो दहेज लेता है उनको कन्या देना पाप है।
हां यह सचमुच बात है।

जब तक दहेत का जीवित बना रहेगा भूत है।
तब तक हर घर में होगी इसके द्वारा लूट है।
जागो फिर से युवकों यह अच्छा मोड़ हे तो ।
अब दहेज की दीवारों को एक बारी ही मे तोड़ दो।
आज शील समता की घर–घर बन्धु लगाओं छाप यह।
होगा ऊंचा शीश जाति का मिट जाएगा पाप यह ।
धुल जाएगा दाग यह।

अग्रोहा से अग्रसेन का...

अग्रोहा से अग्रसेन का, गूंजेगा अब गौरव गान।
महालक्ष्मी व सरस्वती का, मिले यहां पावन वरदान।।
नफरत का अस्तित्व नहीं था, छलका करता सबमें प्यार।
सभी जनों का इस धरती पंर, पूरा–पूरा था अधिकार।।
प्रेम, दया, ममता, समता की, बहती थी यहां पर रसधारा।
आगन्तुक का स्नेह–भाव से , होता था स्वागत सत्कार।।
इसकी छाया तले सुरक्षित, रहे सदा सब ही इन्सान।
अग्रोहा से अग्रसेन का, गूंजेगा अब गौरव गान।।१।।

संशय कहीं नहीं था मन में, जन–जन में देख विश्वास।
हरभज शाह, लक्खी बनजारे का, अग्रोहा में है इतिहास।।
कोई हृदय उदास नहीं था और न मुख कोई निस्तेज।
अपनी–अपनी आन निभाने को, रहते थे सब ही तेज।।
धर्म ध्वजा का इस धरती पर होगा फिर सच्चा सम्मान।
अग्रोहा से अग्रसेन का, गूंजेगा अब गौरव गान।।२।।

भर देगी आलोक विश्व में, अग्रोहा से जली मशाल।
कर देगी यह शान्त सभी, मन में आये भीषण भूचाल।।
समय यही आगे बढ़ने का, समझो नहीं स्वयं का हेय।
दृढ़ निश्चय से बढ़ने वाले, हो जाते है स्वयं अजेय।।
अग्रोहा का धाम पांचवा, अग्रवंश की होगी शान।
अग्रोहा से अग्रसेन का , गूंजेगा अब गौरव गान ।।३।।

महालक्ष्मी की कृपा हो रही, मंदिर अब बन जायेगा।
सरस्वती की पुण्य कृपा से, कालेज भी खुल जायेगा।।
अग्रसेन की पावन नगरी, अग्रोहा बस जायेगा।
प्रभु की इच्छा पूरी होगी, अग्रवंश हर्षायेगा।
'मां शिला' का अद्भूत मंदिर तिलकराज की है पहिचान।
अग्रोहा से अग्रसेन का, गूंजेगा अब गौरव गान।।४।।

पुण्य धाम अग्रोहा की रज

पुण्य धाम अग्रोहा की रज
माथे की चन्दन बन जाए।
यही कामना लिए हृदय में
दूर–दूर से हैं हम आए।।

नहीं थकान आयी तन में
ना सुविधा की चिनता मन में।
एक लगन ले चली सभी को
अग्रोहा दर्शन पाए ।।

त्याग भावना जहाँ प्रसिद्ध थी
शोषण रहित समाज जहाँ।
मिले ईंट और एक रूपया
ऐसी सुविधा और कहाँ ।।

स्वप्न भंग हो गए देखकर
अग्रोहा गण राज्य हमारा।
कहाँ गये वे महल अटारी
कहाँ गया अग्रोदक प्यारा।।

बारह वर्ष बीतने पर तो
भाग्य उदय धूरे के होते।
बीते वर्ष सात सौ फिर भी
पडे़ खण्डहर अब भी रोते।।

उजड़े खण्डहर पर अब कब तक
काग चील मंडराएंगे ।
अग्रधाम जब पुनः बसे
तब अग्रवाल कहलायेंगे।।

अग्रोहा की माटी चन्दन

अग्रोहा की माटी चन्दन, इसका तिलक लगा लें ।
दे अपना–अपना योगदान, अग्रोहा–तीर्थ बना लें।।

यह अग्रसेन की कर्मभूमि, यहां बन्धु–प्रेम पला था।
एक ईंट और एक रूपये में समता – भाव घुला था।।

भूली–बिसरी मधुर बात को हम सब अब दोहरालें।
दे अपना–अपना योगदान, अग्रोहा–तीर्थ बना लें।।

यहां विश्व को दया एकता का उपहार मिला था।
सत्य अहिंसा प्रजातंत्र का सुन्दर पुष्प खिला था।।

नष्ट किया गणराज्य स्वार्थ ने, भूल को आज भूला लें।
दें अपना–अपना योगदान, अग्रोहा तीर्थ बना लें।।

छप्पन करोड स्वर्ण मुद्रा से उसको पुनः बसाया।
उस दानी हरभजशाह का यश सब जग ने गाया।।

आक्रान्ता ने पुनः उजाड़ा, उससे कुछ शिक्षा लें।
दे अपना–अपना योगदान, अग्रोहा–तीर्थ बना लें।।

युग ने करवट वदली है, फिर नव–निर्माण करेंगे।
अग्रसेन के सपनों को अब, हम साकार करेंगे।।
दृढ निश्चय कर काम करें, मुश्किल आसान बनालें।
दें अपना अपना योगदान, अग्रोहा तीर्थ बना लें।।

यह धरा सुवासित

यह धरा सुवासित है देखो अग्रोहा की
महक रही है सांस–सांस अग्रोहा की
अग्रसेन के आदर्शों की यह साक्षी
हमें पूज्य है देवभूमि अग्रोहा की।
जीवन का संदेश यही माटी देती
अमृत सर बरसाती धरा अग्रोहा की।
आलोक बिखेरे जग में यह पावन धरती
भू का है यह स्वर्ग धरा अग्रोहा की।

चलें अग्रोहा चलें .....

चलें अग्रोहा चलें अग्रोहा चलें अग्रोहा चलें
पितृ देव की पावन भूमि, जन्म भूमि के दरश करें।
कहीं से भी बैठ रेल में, पहिले दिल्ली चले
दिल्ली से फिर हिसार बैठकर अग्रोहा मोड मुड़े
चलें अग्रोहा चलें अग्रोहा चलें अग्रोहा चलें

कुल देवी महालक्ष्मी जी का प्रताप देखो अग्रोहा तीर्थ बने
संकट मोचन पवन पुत्र श्री मारूती के गगन चुम्बी शिखर बने।
चलें अग्रोहा चलें अग्रोहा चलें अग्रोहा चलें

पितृ देव की पावन भूमि जन्म भूमि के दरश करें
शक्ति सरोवर में पाप उतारें, मां शिला के दरश करें।
मेडिकल कालेज में पढकर बच्चे चिकित्सा क्षेत्र में उन्नति करें।
खण्डहर कहते गाथा पुरानी यहां नव निर्माण चले।
सहयोग हेतु आज भी एक रूपया एक ईंट योजना चले।
चलें अग्रोहा चलें अग्रोहा चलें अग्रोहा चलें

अपने कुल गौरव का मान बढायें सभी को अग्रोहा दरश करवायें।
अग्रोहा के रजकण चन्दन उन्है शीश लगायें।
समता, त्याग, अंहिसा भाव को मन में बसा लायें।
चलें अग्रोहा चलें अग्रोहा चलें अग्रोहा घूम आयें।

अग्रोहा को देखा तो ऐसा लगा जैसे .....

अग्रोहा को देखा तो ऐसा लगा
जैसे खिलता गुलाब,
जैसे अग्रसेन का ख्वाब
जैसे उजली किरण
जैसे वन में हिरण उसमें मंदिर की शान
जैसे सोने की खान
जैसे मंदिर में हो एक जलता दिया।
अग्रोहा को देखा तो ऐसा लगा .....

वहाँ पर लक्ष्मी का रूप, मानो निकल आई धूप
वहाँ पर सरोवर की शान, जैसे रंगों की जान।
वहाँ पर मंथन का खेल, जैसे बल खाये बेल
और खुशबू लिए ठण्डी हवा
अग्रोहा को देखा तो ऐसा लगा.....

वहाँ अग्रसेन का जोर , जैसे नाचता मोर,
वहाँ दिखा बडा बाग, जैसे परियों का राग,
वहाँ रंगों की फुहार, जैसे स्वर्ण की शुरूआत,
वहाँ से अहिस्ता अहिस्ता आगे बढा।
अग्रोहा को देखा तो ऐसा लगा। .....

आओ मिलकर करे सुधार

चलो चलें इक पावन धाम, अग्रोहा जिसका प्यारा नाम।
अग्रसेन महाराज के दर्शन कर आए, और उनसे आर्शीवाद पाए।।

कुल देवी लक्ष्मी का ध्यान करें हाथ जोडकर उन्हे प्रणाम करे।
अपनी मातृ भूमि का गान करें, शक्ति सरोवर में स्नान करे।।

अग्रोहा धरती का हर टीला हम को ही पुकार रहा है।
पूर्वज की इस भूमि की, जय–जयकार यह कर रहा है।।

दर्शन करके इस धाम का, हो जाए हम सब का उद्धार।
हम सब अपनी मातृ भूमि का, आओ मिलकर करें सुधार।।

जय अग्रोहा धाम

जय अग्रसेन जय अग्रोहा जय अग्रोहा धाम।
आओ हम सब मिलकर बढ़ावें इसकी शान।।

अग्र समाज में एकता का हो न अभाव।
दूर करें हम बन्धू अपने सब मनमुटाव।।

शादी विवाह को समझें न कोई व्यापार।
दौलत का मोह छोड़कर गुणों से करें प्यार

बुजुर्गों की सेवा करें वो देंगे आशीर्वाद।
झूठी शान की खातिर धन न करें बर्बाद।।

अग्रसेन पावन पथ अपनावें क्या है जाता।
असंगत कुप्रथाओं से तोड़े हम अपना नाता।।

दुर्बुद्धि, दुर्व्यसनों, दुष्कर्मों का छोडें हम साथ।
सत्य, न्याय, दान और ममता का पकड़ें हाथ।।

अग्रसेन के पावन चरणों में शीश नवायें।
आओ हम जगत् में अग्र पताका फहरायें।।

अग्रसेन के अग्रवंश की

अग्रसेन के अग्रवंश की जो महिमा हैं गाते ।
नव समाज में नई रोशनी जनता में फैलाते।।

सत्य अहिंसा, कर्मशीलता का नगर बसाएं।
दीन दुःखी जो बन्धु हमारे उनके दर्द मिटाँए।।

हिम्मत से जो आगे बढ़ता अग्रवाल कहलाता।
सदा स्वच्छता, नम्रभावना सद्गुण है दर्शाता।।

स्वयं भी जीता है शुभ जीवन, औरों को सिखलाता।
अग्रसेन को परम प्यारा, सबकी आशीष पाता।।

रीति और रिवाजों में जो सोच समझ कर चलता।
अपने से ऊपर वालों को देख के नहीं जलता।।

धर्म–हृदय, मानवता प्रेमी गो, ब्राह्मण का प्यारा।
अग्रसेन का धर्म पूत हो मिलता उसे किनारा।।

अत्यचारों से टकराए नशे खोरियां छोडे।
बन्धे कुरीति के बन्धन को हिम्मत से जो तोड़े।।

लेन देन के लालच में फंस कहीं न बिछुडे जोडे।
यह दूल्हा है सौ हजार का कहीं न अटकें रोड़े ।।

अग्रोहा में अग्रसेन की फिर से याद मनाएं।
अग्रवाल का मानस मन्दिर सुन्दर स्वच्छ बनाएं।।

अग्रसेन की अग्रोहा में फिर से ध्वजा फहराएं।
ईंट रूपया वाली बातें सबको याद दिलाएं।।

कहीं रहें, धूमें जगसारा अपनापन दिखलाएं।
भाई परमानन्द पुकारे जग में आदर पाएँ।।

अमर हमारा अग्रवंश है

अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान है।
हम न रूकेंगे, हम न झुकेंगे, अग्रसेन सन्तान हैं।।

जाति हमें प्राणों से प्यारी, उसकी सेवा धर्म हमारा,
अग्रसेन–पथ वरण करेंगे, यह सच्चा कर्त्तव्य हमारा,
इसका हम उत्थान करेंगे, इसके हम प्राण हैं,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं।।१।।

हम चन्दा बनकर चमकेंगे, सूरज बनकर दमकेंगे।
होंठ–होंठ की हँसी बनेंगे, हँसा–हँसा कर हँस लेंगे।
अग्रवंश अभिमान बनेंगे, अग्रवंश अभिमान हैं,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं ।।२।।

अग्रसेन पर चँवर ढोलते, उसके चाँद–सितारे हैं,
नई रोशनी नई हवा में, हमने प्राण सँवारे हैं।
हम फूलों से मुस्कायेंगे, फूलों सी मुस्कान हैं,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं।।३।।

साम्य और समता लायेंगे, सारी विषमता हर लेंगे।
दुख–दारिद्रेय मिटाकर सबका, अग्रसेन–पथ वर लेंगे।
अग्रसेन के स्वर गायक हम, अग्रसेन की शान हैं,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं,।।४।।

अग्रसेन की विजय पताका, प्राणों से भी प्यारी है,
नई उमंगों में भर कर हम, करते सब रखवारी हैं।
इसकी शान न जाने देंगें शिव संकल्पी आन है,
अमर हमारा अग्रवंश है, अमर हमारे गान हैं। ।५।।

यह कौम है अगरवालो की

यह कौम है अगरवालों की, जाबांजो की मतवालों की ।
इस कौम का यारो क्या कहने, साकार करे जो हर सपने।

ये परम दयालु उपकारी, वैष्णव धर्मी शाकाहारी ।
ये विवेकशील हैं, दानी है, और बुद्धिमानी लासानी है।

ज्यादातर इनमें व्यापारी है, जमा लई साहूकारी है।
इनमें उद्योगपति भी है, और टेक्निकल हस्ती भी है।

पुरूषार्थी होते अग्रवाल, पत्थर से पानी ले निकाल।
मिट्टी भी सोना बन जाती , जो इनके हाथों मे आती।

कैसी भी हो इण्डस्ट्री, इनकीहो जहां कृपा दृष्टि।
सूरज सी चमकने लगती है, फुलो सी महकने लगती है।।

यह कौम कलेजे वालों की, बुलंद हौसले वालों की।
इस कौम का यारों क्या कहने, साकार करे....
यह कौम है. .....

जग में ऐसा स्थान नहीं, जहां इनकी हो संतान नहीं।
पर नही संगठन है इनमें, यह कमी अखरती है मन में।।

ज्यों नमक बिना स्वादिष्ट साग, ज्यों बिन गुलाल खलती है फाग।
जो एक सुत्र में बंधने की और देश जति पर मिटने की ।।

यदि प्रबल भावना जग पाए, तो प्राप्त अमरता हो जाये।
इनका भविष्य उज्जवल अवश्य, मजबूत संगठन भी होगा।

शासन में जब भी होंगे, मोहन का मन पुलकित होगा।
यह कौम है हिम्मत वालों की , और शांतिप्रिय परवानों की।
इस कौम का यारों क्या कहने, साकार करे जो हर सपने।।
यह कौम है .....

अग्रोहा की पावन भूमि

अग्रसेन महाराज हम केवल इतना कर पायें।
तेरी पावन पूजा से हम , अपना धर्म निभा पाये।।

अग्रोहा तीर्थ के सब कण कण,
जय बोल रहे तेरी क्षण क्षण।
हम भी अपने तन मन धन से,
उस जय को सफल बना पायें।
तेरी पावन पूजा में हम, अपना धर्म निभा पायें।।

अपने समाज का यह वैभव,
घिर रहा तिमिर से है यह अब।
कथनी करनी के अन्तर से,
होकर के मुक्त दिखा पायें।
तेरी पावन पूजा में हम, अपना धर्म निभा पाये।।

घर के बंन्धन आकर्षण,
इस दहेज से पीडित जन जन
हम सब की यह आंकांक्षा है,
इस पीडा से मुक्ति पायें ।
तेरी पावन पूजा में हम, अपना धर्म निभा पाये।।

पावन जयन्ती की बेला में,
हम तनिक न पडें असमंजस में।
अपने समाज के वैभव हित,
जीवन सर्वस्व लगा जावे।
तेरी पावन पूजा में हम, अपना धर्म निभा पाये।।

मंगल ज्योति जलायें।

बन विश्व धर्म की मधुमय सुरभि, कण–कण में रम जाये।
हम मंगल ज्योति जलाएं हम मंगल ज्योति जलाएं

शाश्वत जीवन ज्योति जले
जन–जन में अमृत भाव फले
अग्रधाम के नील गगन पर
नव प्रकाश का सूर्य जले

हम अग्रसेन की सन्तानें, सौहार्द गीत मिल कर गाएं, हम .....
हम ऊँचें शिखर हिमालय के,
यृश कलश हैं गंगा धारों के।
हम भामाशाह के वंशज हैं,
नित खेलें साथ बहारों के।
मातृ भूमि के श्री चरणों पर बलिदानों का अर्ध्य चढ़ा, हम .....

ज्योति पुरूष के हम अनुगामी
समता–समाज के हैं हामी।
भ्रान्त विश्व को राह दिखायें,
बन कर निष्कलंक, निष्कामी।

वसुधा पर हम दया–धर्म दान की, त्रिवेणी सरसांएं। हम .....
अग्रोहा अनुपम तीर्थ हमारा।
स्वर्गोपम सा सब से न्यारा।
उत्कर्षों का पुंज पिटारा।
अमर कीर्ति का ये ध्रुव तारा।
नमन् करें हम यश धरती को, रज–चन्दन शीश लगायें। हम ...

महाराजा अग्रसेन जयन्ती सम्बन्धी नारे

जब तक सूरज चांद रहेगा
श्री अग्रसेन जी का नाम रहेगा

घर–घर अलख जगायेंगे
अग्रोहा तीर्थ बनायेंगे

महाराजा अग्रसेन का समाजवाद
अमर रहे अमर रहे

महाराजा अग्रसेन जी की
जय

आज क्या है
श्री अग्रसेन जयन्ती

दहेज समाज के लिए
कोढ़ है

बहू को
बेटी समझे

दहेज जहर के सामान है
बहूओं की हत्या इसका प्रमाण है

कुरीतियों को दूर हटाये
अग्रसेन जी का मान बढायें

अगर रोकनी है बर्बादी
बंद करो खर्चीली शादी

पुनर्विवाह का पवित्र विचार
विधवा अबला का उपकार

जो विधवा को देते कष्ट
उनका होता कुनबा नष्ट

एक दो तीन चार
अग्रसेन जी की जय जयकार

पांच छह सात आठ
अग्रसेन जीं के देखो ठाठ

अग्रसेन अग्रोहा का यह संदेश
एक रहेगा भारत देश

अग्रोहा कर रहा पुकार
सब मिल करो उद्धार

अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन नई दिल्ली

राष्ट्र के समस्त अग्रवाल परिवारों को एकसूत्र में पिरोने की भावना से इन्दौर में सन् 1975 में श्री श्रीकिशनजी मोदी की अध्यक्षता में अखिल भारतीय अग्रवाल सम्मेलन का गठन किया गया। सम्मेलन के प्रयासों से अग्रवाल समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन एवं जागृति आई है। अ. भा. अ. स. के उद्देश्यों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है। प्रथम : संगठन की दृष्टि से विविध प्रकार की व्यक्तिगत सदस्यता एवं सस्थाओं की सदस्यता, द्वितीय : समाज उत्थान एवं सेवामयी विकास हेतु त्रिसूत्रीय कार्यक्रम (अ) विवाह योग्य युवक–युवतीयों के लिए परिचय सम्मेलन एवं सामूहिक विवाहों का आयोजन (ब) सशक्त समर्पित व समर्थ युवा दल (अग्र सैनिक) तैयार करना (स) हमारी पितृ भूमि अग्रोहा को पांचवे तीर्थ धाम के रूप में विकसित करना। निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री बनारसी दास जी गुप्त वर्तमान में सम्मेलन के राष्ट्रीय संरक्षक हैं। इनके अतिरिक्त सम्मेलन का नेतृत्व निम्नानुसार है–

अखिल भारतीय स्तर पर

राष्ट्रीय अध्यक्ष	:	श्री विजय कुमार चौधरी
राष्ट्रीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	:	श्री प्रदीप मित्तल
राष्ट्रीय महामंत्री	:	श्री सुरेन्द्र गुप्ता

प्रान्तीय स्तर पर (पूर्वी राजस्थान अग्रवाल सम्मेलन)

प्रान्तीय अध्यक्ष	:	श्री राधेश्याम गोयल
प्रान्तीय वरिष्ठ उपाध्यक्ष	:	श्री रामावतार सिंघल
प्रान्तीय महामंत्री	:	श्री गिर्राज प्रसाद मित्तल

कोटा जिला इकाई स्तर पर (अग्रवाल सम्मेलन जिला कोटा)

जिला अध्यक्ष	:	श्री हरीश अग्रवाल चांदी वाले
जिला वरिष्ठ उपाध्यक्ष	:	श्री राजमल टाटीवाले
जिला महामंत्री	:	श्री डॉ. लोकमणि गुप्ता

उत्कृष्ठ परीक्षा परिणामों के साथ कोटा जिले की
अग्रणीय शैक्षणिक संस्था

शिव ज्योति सीनियर सैकेण्डरी स्कूल

इन्द्रा विहार, तलवण्डी, कोटा
☎ 431928, 436928, 422928 (R) 322824
(Mobile) 98290-36117

- माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान अजमेर के सेकेण्डरी एवं सीनियर सैकेण्डरी कक्षाओं के परिणाम शत–प्रतिशत
- छात्रों के बैठने के लिए आधुनिकतम व्यवस्थाओं से परिपूर्ण शाला भवन
- अनुशासन बद्ध शिक्षा
- कुशल प्रशिक्षित शिक्षक
- आधुनिक संसाधनों से युक्त प्रयोगशाला

रमेश गुप्ता
चेयरमेन
शिव ज्योति शिक्षा समिति

नरेश गुप्ता
व्यस्थापक

महेश गुप्ता
निदेशक
शिव ज्याति सी. सै. स्कूल

सनलाईट ऑफसेट, गुलाबबाड़ी आर्य समाज रोड, कोटा ☎331456